LUKMAAN IAS

...Lead with Edge...

सत्र- 2018

समाजशास्त्र परीक्षा सीरीज

कुल 12 परीक्षाएं

समाजशास्त्र की परीक्षा मे पूछे गए प्रश्नों का विश्लेषण एवं उनका स्वरूप

आपने यह रेखांकित किया होगा कि पिछले 4 वर्षों से जब संघ लोक सेवा आयोग ने दो वैकल्पिक विषयों के स्थान पर एक ही विषय का प्रावदान किया है, तबसे प्रश्नों की प्रकृति में एक बदलाव आ गया है। समाज शास्त्र के प्रश्नों में तुलनात्मक प्रश्न पूछे जाने लगे और अब तो यह नियमित हो गया है। इनके अतिरिक्त कुछ विशेष बातें भी लक्षणीय हैं।

1. प्रथम प्रश्न पत्र में जो समाजशास्त्र का सिद्धांत है उसमें प्रति वर्ष भारत के समाज से प्रश्न पूछे जाने लगे हैं।

2. समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के संदर्भ में अब व्यावहारिक प्रश्न पूछे जा रहे हैं। उदाहरण के लिए मर्टन के सिद्धांतों के आधार पर यातायात नियमों के उल्लंघन की व्याख्या करें अथवा पार्सन्स का समाज व्यवस्था का सिद्धांत किस प्रकार भारतीय समाज की व्याख्या करने में सहायक है।

3. भारत के समाज के संबंध में जो प्रश्न पूछे जाते हैं, उसकी सीमा निर्धारित नहीं है। वह कुछ भी पूछ सकते हैं। द्वितीय पत्र के पाठ्यक्रम में कहीं भी भारत के समाज सुधारकों का उल्लेख नहीं है। पिछले 4 वर्षों से गांधी, फुले और अंबेडकर पर प्रश्न पूछे जा रहे हैं। इस आधार पर भविष्य में हम ये अनुमान लगा सकते हैं कि वे नारायण गुरु और पेरियार से संबंधित प्रश्न पूछेंगे।

4. दूसरे प्रश्न पत्र में वे सामाजिक मुद्दों और सामाजिक समस्याओं से प्रश्न पूछते रहे हैं। इन मुद्दों और समस्याओं में हाल के वर्षों के सामाजिक विधान जैसे भारतीय वन सुरक्षा अधिकार, बाल श्रम अधिनियम में संशोधन, गांव-नगर मिशन, स्वच्छ भारत अभियान आदि क्षेत्रों से प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

5. प्रथम प्रश्न पत्र में आप कभी भी किताबों से उदाहरण नहीं दे, ना ही पश्चिमी समाजों से उदाहरण दें। आप अनिवार्य रूप से भारत के समाज के उदाहरण दें। ऐसे उदाहरण आपके व्यक्तिगत जीवन और आपकी पारिवारिक जीवन से कदापि संबंधित नहीं होने चाहिए। ऐसी ही घटनाओं को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करें, जो समाचार पत्रों में छप चुकी हैं अथवा जिनका प्रसार इलैक्ट्रानिक मीडिया से हुआ है। निजी जीवन के उदाहरण नहीं हो, बल्कि सार्वजनिक जीवन के उदाहरण हों।

6. भारत के समाज से संबंधित प्रश्नों में और विशेष रूप से सामाजिक मुद्दों और सामाजिक विधानों से संबंधित प्रश्नों में आपके उत्तर सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य में होंगे। प्रश्न तो सामान्य अध्ययन जैसे होंगे, लेकिन इस विषय में उनका उत्तर

समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में होंगे। यह अनिवार्य है समाजशास्त्र में चार ही सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य हैं। मार्क्सवादी, वेबरवादी, प्रकार्यवादी और अंतर्क्रियावादी परिप्रेक्ष्य हैं। समाजशास्त्र में अंतर्क्रियावादी सिद्धांत को लागू करना सबसे सरल है। यह सिद्धांत प्रतिकात्मक अंतर्क्रियावादी कहलाता है।

7. भारत का समाज पत्र में आपको हल हाल में अध्ययनों का हवाला देना है। यह अधिक उचित है कि हाल के अध्ययनों का उल्लेख किया जाए। ऐसे अध्ययन अंग्रेजी के जरनल EPW से संग्रहित किए जा सकते हैं।

8. आप अपने दिमाग में सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्यों को बराबर बनाए रखें। जैसा हमने उल्लेख किया है, ऐसे पिरप्रेक्ष्य केवल चार ही है। यह याद रखिए समाजशास्त्र में कुछ भी सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्यों के बाहर नहीं है। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में आप जिसे भा पसंद करें, उस सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य के आदार पर अपने उत्तर लिख सकते हैं।

9. समाजशास्त्र के दोनों पत्रों में विद्वानों का उद्धरण, संबंधित अध्ययन और उदाहरण देने चाहिए। आयोग परीक्षाओं का आयोजन योग्य उम्मीदवारों के चुनाव के लिए करता है। प्रतियोगिता में दूसरों से बाजी मार ले जाने के लिए यह जरूरी है कि आप अध्ययनों और उद्धरणों का सही-सही इस्तेमाल करें।

संपूर्ण पाठ्य सामग्री छपे हुए रूप में नियमित अंतराल पर परीक्षा से पहले आपको उपलब्ध कराई जाएगी। जिससे आप परीक्षा की सार्थक तैयारी कर सकें।

समाजशास्त्र मुख्य परीक्षा के लिए आयोजित परीक्षा सीरीज निम्नलिखित परीक्षाओं की तिथि, परीक्षाओं की संख्या और पाठों की सूची है, जिससे प्रश्न पूछे जाएंगे।

पाठ की इकाइयां	परीक्षातिथि
समाजशास्त्र प्रथम प्रश्न पत्र	
1. समाजशास्त्र का परिप्रेक्ष्य, समूह और समूह जीवन, संस्कृति, राजनीतिक और आर्थिक जीवन। 2. सामाजिक स्तरीकरण, स्तरीकरण के आयाम, वर्ग, प्रस्थिति समूह, जाति, जेंडर, संजातीय, प्रजाति। समानता, असमानता, श्रेणीक्रम, विलगाव, दरिद्रता और वंचन। स्तरीकरण के सिद्धांत मार्क्स, वेबर, एविस तथा मूर। सामाजिक गतिशीलता, गतिशीलता के बंध और खुले स्वरूप, सामाजिक गतिशीलता के प्रकार, वर्ग और जाति में गतिशीलता, सामाजिक गतिशीलता के कारण। 3. श्रम एवं सामाजिक जीवन - विभिन्न समाजों में श्रम के संगठन का विभिन्न स्वरूप। जैसे गुलाम समाज, सामंत समाज, औद्योगिक पूंजीवादी समाज। श्रम का औपचारिक एवं अनौपचारिक स्वरूप। श्रम और समाज, उदारीकरण और मजदूर, 4. राजनीति और समाज- शक्ति के समाजशास्त्रीय सिद्धांत, वेबर, शक्ति का शून्यवादी सिद्धांत, सामाजिक शक्ति - पार्सम्स, आर्यडाल, एस एम लिप्सेट इत्यादि। अभिजन शक्ति, मोज्का, परेटो, मिल्स, हंटर। शक्ति अभिजन की चाल्स राइट मिल्स की धारणा एवं इसके विभिन्न आयाम। राष्ट्र, राज्य, नागरिकता, टी एच मार्शल के विचार, आंद्रे बेते की आलोचना, लोकतंत्र, नागरिक समाज, लोकतंत्र और नागरिक समाज के पारस्परिक संबंध,	19 **नवंबर2017**

राजनीतिक दल, मैक्स वेबर, लिप्सेट और माइकल यंग, दबाव समूह और इसकी भूमिका, दबाव समूह और राजनीतिक दल में समानताएं और भिन्नताएं, विचारधारा, विचारधारा का अर्थ, विचारधारा के तत्व, राष्ट्र और राज्य में सामाजिक आंदोलन और सामाजिक रूपांतरण में विचारधारा की भूमिका, सामूहिक कार्रवाई और सामाजिक आंदोलन में अंतर, सामाजिक आंदोलन, सामाजिक आंदोलन की पूर्व शर्तें, सामाजिक आंदोलन और सामाजिक क्रांति।	
1. धर्म और समाज- धर्म के समाजशास्त्रीय सिद्धांत, दर्खाइम, पार्सम्स और सोरोकिन। धार्मिक व्यवहार के स्वरूप, जीवात्मावाद, एकल ईश्वरवाद, बहु ईश्वरवाद, भारत में धर्म की प्रणालियां, धार्मिक संगठन- क्लिसिया, धर्म समूह, संप्रदाय और धार्मिक पंथ। आधुनिक समाजों में धर्म, धर्म और विज्ञान, धर्म निरपेक्षता और धर्म निरपेक्षीकरण, धार्मिक पुनर्रूत्थानवाद, सांप्रदायिकता, बुनियादपरस्ती। 2. नातेदारी के सिद्धांत- नातेदारी के प्रकार, परिवार, घर, परिवार के घरेलू आयाम, परिवार के प्रकार, विवाह, विवाह में परिवर्तन, विवाहेत्तर सहवास, वंश और उत्तराधिकार, मर्दवाद और यौनिक श्रम विभाजन, आधुनिक विश्व में महिला की स्थिति, परिवार और विवाह की आधिक प्रवृत्तियां। 3. आधुनिक समाज में सामाजिक परिवर्तन - सामाजिक परिवर्तन के समाजशास्त्रीय सिद्धांत, मार्क्स, सोरोकिन, ऑगबर्न। विकास के मॉडल - समाजवादी मॉडल. सामाजिक लोकतांत्रिक मॉडल, आधुनिकीकरण अथवा पूंजीवादी मॉडल। लातिनी- अमेरिकी समाजों के संदर्भ में निर्भरता का सिद्धांत- राउल प्रेविस का योगदान।	**26 नवंबर2017** **+ प्रथम परीक्षा की चर्चा**
1. समाजशास्त्र का विषय- समाजशास्त्र का उदय, यूरोप में सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण का उदय समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में, समाजशास्त्र क्या है?, समाजशास्त्र की विषयवस्तु, समाजशास्त्र की तुलना मानवशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान से। समाजशास्त्र और कॉमनसेंस, समाजशास्त्र में कॉमनसेंस की भूमिका नहीं, समाजशास्त्र का वैज्ञानिक मिज़ाज। 2. समाजशास्त्र विज्ञान के रूप में, विज्ञान, वैज्ञानिक पद्धति और इसकी आलोचना, विज्ञान के सिद्धांत, वस्तुनिष्ठता, मूल्य निरपेक्षता, प्रमाणिकता, पुनर्मूल्यांकन, तथ्य और मूल्य, समाजशास्त्रीय अनुसंधान के प्रमुख सैद्धांतिक प्रवृत्तियां और पद्धतियां- ऐतिहासिक द्वंद्ववादी पद्धति, तुलनात्मक पद्धति, वर्सटेहेन अथवा व्याख्यात्मक समझदारी की पद्धति और अनुभवजन्य पद्धति, प्रत्यक्षवाद और उसकी आलोचना, प्रत्यक्षवादी पद्धति के एक प्रकार के रूप में अनुभवजन्य पद्धति, प्रत्यक्षवादी पद्धति के प्रमुख रूपाकार - काउंट, दर्खाइम, पार्सन्स और मर्टेन। अप्रत्यक्षवादी पद्धतियां - द्वंद्ववादी ऐतिहासिक पद्धति, वर्सटेहेन अथवा व्याख्यात्मक समझदारी की पद्धति। 3. अनुसंधान और व्याख्या की पद्धतियां - गुणात्मक और संख्यात्मक पद्धतियां, सामाजिक अनुसंधान के प्रारूप, उपकल्पना, चर या वेरिएबल, निर्देशन और इसके प्रकार, प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़े, आंकड़ों को जमा करने की तकनीकें - अवलोकन, सहभागी अवलोकन, साक्षात्कार, निर्देशित समूह साक्षात्कार, प्रश्नावली, अनुसूची, वर्गीकरण की तकनीक, व्याख्या की तकनीक, सामान्यीकरण की तकनीक जैसे डिडक्टीव और इनडक्टीव तकनीक।	**03 दिसंबर2017** **+ द्वितीय परीक्षा की चर्चा**
1. समाजशास्त्रीय सिद्धांत- मार्क्स, ऐतिहासिक भौतिकवाद, उत्पादन की शैली, वर्ग संघर्ष, अलगाव। दर्खाइम- सामाजिक तथ्य, श्रम विभाजन, आत्महत्या, धर्म और समाज। मैक्स वेबर - सामाजिक क्रिया, आदर्श प्रारूप, प्राधिकार, युक्तिपूर्णता, नौकरशाही, पूंजीवाद, प्रोटेस्टेंट नीतिशास्त्र और पूंजीवाद का उदय, मार्क्स और वेबर की पूंजीवाद की धारणाओं की तुलना, मार्क्स के अलगाव और दर्खाइम के एनोमी की तुलना। मार्क्स और दर्खाइम श्रम विभाजन संबंधी विभाजन की तुलना, सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धांत के संदर्भ में मार्क्स और वेबर की तुलना, वर्ग और वर्ग संघर्ष की धारणाओं की मार्क्स और वेबर की तुलना,	**10 दिसंबर2017** **+ तृतीय परीक्षा की चर्चा**

पार्सन्स- सामाजिक क्रिया, सामाजिक क्रिया के संदर्भ में पार्सन्स और वेबर की तुलना, पार्सन्स की समाज व्यवस्था की धारणा, प्रतिमान चर की धारणा, मार्क्स और पार्सन्स के सामाजिक परिवर्तन के धारणाओं की तुलना। आर के मर्टन - शास्त्रीय प्रकार्यवाद में संशोधन, स्पष्ट और अस्पष्ट प्रकार्य की धारणा, अकार्य की धारणा, अनुरूपता और विचलन की धारणा, दर्खाइम के एनोमी और मर्टन के विचलन के धारणाओं की तुलना। जार्ज हरबट मीड - स्व और अस्मिता की धारणा, स्व के विकास के चरण, अस्मिता के विकास के चरण, प्रतिकात्मक अंतर्क्रियावाद और इसके प्रयोग।	
समाजशास्त्र द्वितीय प्रश्न पत्र	
1. भारतीयसमाज की एक सामान्य चर्चा- घुरीए का भारत विद्धया संबंधी दृष्टिकोण, श्रीनिवास का भारत के मूल्यांकन के संबंध में प्रकार्यवादी दृष्टिकोण, ए आर देसाई का ऐतिहासिक द्वंद्वात्मक दृष्टिकोण एवं आंद्रे बेते का भारत संबंधी वेबरवादी दृष्टिकोण। 2. भारत के समाज पर औपनिवेशिक शासन का प्रभाव - ब्रिटिश प्रभाव का सामान्य मूल्यांकन, देसाई की पुस्तक सोशल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म अथवा भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, योगेंद्र सिंह का मॉर्डनाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रेडिशन अथवा भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण। 3. भारत की सामाजिक संरचना - भारतीय गांव का विचार, स्वतंत्रता के समय भारत के गांव, वर्तमान समय में भारत के गांव एवं भारतीय गावों के अध्ययनों की भूमिका एवं महत्व। 4. भारत की कृषि संरचना, अंग्रेजी राज में भूमि-राजस्व की व्यवस्था - जमींदारी व्यवस्था, रैयतवादी व्यवस्था, एवं महलवाड़ी व्यवस्था, स्वतंत्रता के समय भारत की कृषि संरचना, भारत में भूमि सुधार, भारत में हरित क्रांति एवं दूसरी हरित क्रांति की तलाश। 5. भारत में जाति - जाति व्यवस्था का अर्थ, जाति व्यवस्था की पहचान, जाति व्यवस्था के लक्षण, जाति व्यवस्था के अध्ययन के परिप्रेक्ष्य - घुरए, श्रीनिवास, लुई ड्यूमो एवं आंद्रे बेते, जाति में परिवर्तन एवं निरंतरता, जाति निरंतरता के कारण, जाति अवमानना के रूप में, अस्पृश्यता, वर्तमान भारत में अस्पृश्यता के स्वरूप, दलित जातियां और दलित अस्मिता, पिछड़ी जातियां, शक्तिशाली पिछड़ी जातियों के द्वारा आरक्षण की मांग। 6. भारत में वर्ग - भारत के वर्ग की बेते की धारणा, जाति एवं वर्ग का समन्वित स्वरूप, भारत में मध्य वर्ग, मध्य वर्ग के विभाजन, मध्य वर्ग की भूमिका, पुराना मध्य वर्ग एवं नया मध्य वर्ग, भारत के उद्योगों में वर्ग विभाजन एवं भारती की कृषि में वर्ग विभाजन।	**17दिसंबर2017** **+ चतुर्थ परीक्षा की चर्चा**
1. नातेदारी, परिवार एवं विवाह - भारत में नातेदारी के प्रकार, क्षेत्रीय भिन्नताएं एवं उनके सांस्कृतिक संदर्भ, भारत में वंश एवं उत्तराधिकार, परिवार और घर, परिवार के घरेलू आयाम, एन एम शाह, पैट्रिशिया ओबेरॉय के अध्ययन, भारत के परिवार में परिवर्तन, भारत में मर्दवाद और इसके कारण, भारत की महिलाओं के अधिकार, भारत में महिला परिवार के प्रधान के रूप में, भारत में यौन श्रम विभाजन, भारत में स्त्रियों की भूमिका मे परिवर्तन, भारत में विवाह, वर्तमान भारत में विवाह की प्रवृत्तियां एवं विवाहेतर सहवास एवं उसके संभावित परिणाम। 2. भारत में धर्म - भारत में धार्मिक समुदाय, धार्मिक समुदायों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति, धार्मिक पुनर्रुत्थानवाद, सार्वजनिक जीवन में धर्म की भूमिका, धर्मनिरपेक्षता के संबंध में भारत में विमर्श - आशीष नंदी, त्रिलोकीनाथ मदान, आंद्रे बेते, दीपंकर गुप्ता आदि, भारत में अंतर्समुदाय संबंध, भारत में सांप्रदायिकता एवं भारत में अल्पसंख्यकों की समस्याएं। 3. भारत में राजनीति और समाज - राष्ट्र, राज्य, लोकतंत्र, नागरिक समाज, लोकतंत्र और नागरिक समाज के संबंध, राजनीतिक दल, दबाव समूह, राजनीतिक दलों की सामाजिक और राजनीतिक भूमिका, दबाव समूहों की भूमिका, राजनीतिक दल और दबाव समूह में संबंध। क्षेत्रवाद, भारत में धर्म और राजनीति	**24 दिसंबर2017** **+ पांचवीं परीक्षा पर चर्चा**

एवं भारत में जाति और राजनीति। 4. भारत में जनसंख्या गतिकी - जनसंख्या नीति, उभरते प्रश्न - भारत में वृद्ध जनसंख्या की समस्या, भारत में असमान लिंग अनुपात, विशेष रूप से भारत के कुछ विकसित राज्यों में, जनसंख्या डिविडेंड, भारत में कुशलता प्रशिक्षण एवं भारत की युवा शक्ति को प्रशिक्षण देने के अन्य कार्यक्रम, भारत के पिछड़े राज्यों में हाल के वर्षों में कम होती जन्मदर।	
1. भारत में आदिवासी समुदाय - आदिवासी समुदाय का अर्थ, लौकुर कमेटी की अनुशंसा, जनजातियों के लक्षण, जनजातियोंकी समस्याएं, जनजाति विकास के कार्यक्रम, जनजाति असंतोष एवं आदिवासी आंदोलन, भारत में जनजातियों के एकीकरण के उपाय, आदिवासी नीति और पंचशील, वर्जिनीयस खाखा समिति रिपोर्ट एवं इसकी अनुशंसाएं। 2. भारत में उद्योग और नगरीकरण - भारत में उद्योगों का आरंभ, योजनाबद्ध आर्थिक विकास के युग में उद्योगों की स्थिति, भारत में उद्योग एवं निजीकरण, उदारीकरण एवं भूमंडलीकरण। भारत में मजदूर वर्ग - संरचना, विकास, वर्गीय गोलबंदी, औपचारिक एवं अनौपचारिक क्षेत्र, बाल श्रमिक, अनौपचारिक क्षेत्र में महिलाएं। भारत में नगर समूदायों का विकास, योजनाबद्ध नगर, भारत में महानगर, भारत में नगरीकरण का विकास, भारतीय नगरों का भविष्य, मलिन बस्तियां एवं इनके विकास के कार्यक्रम, भारत के नगरों में गांव से आए हुए गरीब मजदूर, भारत के नगरों में वंचन एवं भारतीय नगरों की समस्या, भारत में गावों एवं गावों का रूपांतरण - ग्रामीण विकास के कार्यक्रम, सामुदायिक विकास कार्यक्रम, सहयोगी समितियां, गावों में दरिद्रता एवं दरिद्रता निवारण के कार्यक्रम, हरित क्रांति एवं उसके प्रभाव, भारत में द्वितीय हरित क्रांति की खोज, भारतीय कृषि में उत्पादन की शैली में परिवर्तन। 3. सामाजिक मुद्दे -स्त्रियों एवं बच्चों का व्यापार, वर्तमान वर्षों में बाल श्रम संबंधी नियमों में सुधार, भारतीय दंड संहिता 498 ए की भूमिका और परिणाम, घरेलू हिंसा कानून-2005, जंगल अधिकार अधिनियम 2006, स्मार्ट सिटी कार्यक्रम, ररबन मिशन, स्वच्छ भारत अभियान, कौशल भारत अभियान, राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम, मद्य निषेध के कार्यक्रम, राजनीतिक एजेंडा के रूप में।	31 **दिसंबर2017** + **छठीं परीक्षा पर चर्चा**
1. भारत में किसान आंदोलन - आंद्रे गुंदर फ्रेंक एवं फोएनटेस का सामाजिक आंदोलन के संबंध में मंतव्य, भारत में किसान आंदोलन के संबंध में एरिक स्टोक्स और बैरिंगटन मूर के विचार, डी एन धनाग्रे द्वारा फ्रेंक की आलोचना, स्टोक्स और मूर की धनाग्रे तथा कैथलीन गफ की आलोचना, तेलंगाना किसान आंदोलन का धनाग्रे का अध्ययन, भारत में महिला आंदोलन, महिला आंदोलन के तीन चरण, महिला आंदोलन और सामाजिक विधान, विशाखा निर्देश, मथुरा बलात्कार की घटना एवं उसके परिणाम, राजस्थान में सती की घटना, निर्भया कांड एवं उसके परिणाम। भारत में पिछड़ी जातियों के आंदोलन - काका कालेलकर समिति, मंडल आयोग की रिपोर्ट एवं इसके परिणाम। दलित आंदोलन - अस्मिता और अधिकार, भारतीय विश्वविद्यालयों में दलितों के नए आंदोलन, अस्मिता के आंदोलन और उनकी सीमाएं, नए सामाजिक आंदोलन - पर्यावरण की सुरक्षा के आंदोलन, जलवायु परिवर्तन की समस्या, चिपको आंदोलन एक महिला एवं पर्यावरण आंदोलन के रूप में। 2. भारत में सामाजिक सुधार एवं सुधारक, ज्योतिराव फुले, नारायण गुरु, गांधी, अंबेडकर एवं पेरियार। 3. भारत में सामाजिक परिवर्तन - भारत में योजनाबद्ध विकास एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था का विचार, संविधान, कानून, सामाजिक विधान और सामाजिक परिवर्तन, भारत में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन। 4. भारत में सामाजिक परिवर्तन की चुनौतियां - विकास का संकट, विस्थापन, परिवेश एवं लगातार विकास की समस्या, दरिद्रता, वंचन एवं असमानता, सामाजिक परिवर्तन और रूपांतरण की समस्याएं, भारत में सामाजिक द्वंद्व, संजतीय द्वंद्व, वर्ग संघर्ष एवं जातीय संघर्ष।	07 **जनवरी2018** + **सातवीं परीक्षा पर चर्चा**

आठवीं परीक्षा पर चर्चा 14 जनवरी2018			
9.	**अभ्यास परीक्षा - 1**/ प्रश्न पत्र - 1	10 बजे से 01 बजे तक	**21 जनवरी 2018**
10.	**अभ्यास परीक्षा - 2**/ प्रश्न पत्र - 2	02 बजे से 05 बजे तक	**21 जनवरी 2018**
दोनों अभ्यास परीक्षाओं पर चर्चा		10 बजे से 01 बजे तक	**28 जनवरी 2018**
11.	**अभ्यास परीक्षा - 1**/ प्रश्न पत्र - 1	10 बजे से 01 बजे तक	**04 फरवरी 2018**
12.	**अभ्यास परीक्षा - 2**/ प्रश्न पत्र - 2	02 बजे से 05 बजे तक	**04 फरवरी 2018**
दोनों अभ्यास परीक्षाओं पर चर्चा		10 बजे से 01 बजे तक	**11 फरवरी 2018**

टेस्ट समय - 2बजे से 5बजे तक

परिचर्चा - 11बजे से 1बजे तक

लेखकीय क्षमता निखारें !

प्रस्तावना

सामान्यतया, परीक्षार्थियों का मुख्य ध्येय उत्तर लिखना है, जिससे समय पर प्रश्न पत्र पूरा हो जाए. इस तीव्र दबाव में, यह मुश्किल ही हो जाता है कि प्रश्नों में ठीक-ठीक क्या पूछा जा रहा है, विशेषकर प्रश्नों में प्रयुक्त मुख्य शब्दावली और उप सर्ग या प्रश्नों में उल्लिखित प्रत्यय, उदाहरणार्थ; विश्लेषण/वर्णन/व्याख्या आदि; अतः प्रश्न की क्या मांग है और वास्तव में क्या लिखा गया है के बीच सुमेल नहीं हो पाता.

अधिकांश छात्र अपने विषय, अवधारणाओं, सिद्धांतों और प्रसंगों के बारे जानते हैं परन्तु वे उन्हें प्रस्तुत करना नहीं जानते हैं. याद रखें,

परीक्षा एक कला है और अनिवार्य रूप से ज्ञान की कसौटी नहीं है.

आपने अक्सर देखा होगा कि एक छात्र जो कम घंटे ही अध्ययन करता है परन्तु परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करता है. जबकि कुछ लोग जो रात-रात भर पढ़ते हैं और अपने नजदीकी लोगों से भी कट जाते हैं, परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते. ऐसा क्यों? वे अक्सर अपने दुर्भाग्य को दोष देते हैं, कुछ बुरे सगुन, कुछ नफरत करने वालों का शाप को इसकी वजह बताते हैं. इस दोष देने वाली प्रवृत्ति से बाहर निकलें. अपने श्रम व निष्ठा को शाप न बनाएं. संभवतः इसका कारण आपकी **लेखन कौशल** की कमी हो.

इसपर कुछ विचार करें, सामान्य अध्ययन और वैकल्पिक विषय के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप एक पैटर्न का अनुसरण करते हैं, जिसमें सामान्यतया पहले विषय या समस्या की भूमिका, तब विभिन्न पैरा में सभी पहलुओं को लिखते हैं और तब आप एक अच्छा निष्कर्ष लिखते हैं. आपने कुछ भी गलत नहीं लिखा मगर आप अच्छे अंक नहीं पाते हैं. प्रश्न है, क्यों? हमें लगता है आपने तीन चीज़ें की या उनमें से कम से कम एक :

तीन सिद्धांत जिसकी आप प्रश्नों को समझने में उपेक्षा करते हैं

1.आपने प्रश्न को बहुत गंभीरता से नहीं पढ़ा.

2. आपने निर्देशों या आदेशों या मांगों या जो कुछ जिसे आप कह सकते हैं, जैसे ; चर्चा, आलोचनात्मक परीक्षण, व्याख्या, उदाहरण सहित समझाना आदि की परवाह नहीं की.

3. आपने प्रश्नों के संदर्भ, प्रश्नों के भाग और प्रश्नों के परस्पर संबंधों पर ध्यान नहीं दिया.

कृपया, कृपया और कृपया प्रश्नों को जितना संभव हो गंभीरता के साथ पढ़ें :

- सवालों का चयन आराम से करें.
- सबसे पहले उस प्रश्न का उत्तर लिखें जो आपको सबसे बेहतर तैयार हो.
- उत्तर की लम्बाई के बजाय उसके सार तत्व पर ध्यान दें.
- मात्रा व गुणवत्ता के बीच संतुलन होना चाहिए.
- प्रश्न के संदर्भ, विषय वस्तु और आदेश के अनुरूप लिखें.

बेहतर उत्तर के लिए तीन सिद्धांत का दर्शन

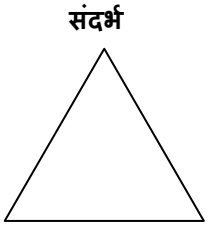

तत्व की तुलना में उत्तर की लम्बाई की प्रासंगिकता कम है

आप कह सकते हैं कि, महोदय, जहां इतना समय है, मैं उत्तर चूक जाउंगा. हम बताना चाहेंगे कि आप अधिकतम शब्दों, जितने की अनुमति दी गई है, न लिखें. यह अधिकतम शब्दों की सीमा है मगर कम से कम की नहीं परन्तु तब शब्दों की संख्या समुचित होनी चाहिए. अपने उत्तरों को लिखने में आप पहला पैरा निबंध के प्रारूप में और शेष को बिन्दुवार परन्तु अंतिम निष्कर्ष के पैरा निबंध के रूप में लिखना चाहिए. यदि औचित्य हो तो इस योजना में बदलाव हो सकता है.

अतः मुख्य बिंदु पर आते हैं; प्रश्न को सावधानीपूर्वक पढ़िए और तीन चीजों पर निर्णय करें:

1. प्रश्न का सटीक अर्थ क्या है?
2. प्रश्न कितने भागों में है?
3. प्रश्न के निर्देश, मांग या आदेश क्या हैं?

स्पष्टीकरण

1. अर्थ को कोई कितना बेहतर समझ रखता है यह ज्ञान के स्तर और जो प्रश्न गढ़ा गया है उसकी विषय-वस्तु / प्रसंग की समझ पर पर निर्भर करता है.
2. प्रश्न के संदर्भ का अर्थ विस्तृत रूप से प्रश्न का क्यों/कब/क्या है.
3. एक प्रश्न के विभिन्न भाग हो सकते हैं, जिसके सभी भागों के उत्तर देने की आवश्यकता हो सकती है.
4. उपसर्गों और प्रत्ययों की बेहतर समझ होनी चाहिए जो प्रश्न के आदेश और निर्देश को निर्धारित करते हैं.

प्रश्नों में प्रयुक्त शब्दावलियों की समझ

यह प्रश्न का उपसर्ग या प्रत्यय है जो उत्तर के निर्देश और आदेश को निर्धारित करता है.यह आपके सुविधा के लिए है, हम स्पष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं कि इन शब्दों का क्या अर्थ है और आपको क्या लिखना होगा.

शब्दावली	अर्थ और मांग
चर्चा	चर्चा में आपको किसी मुद्दे पर उसके दो या सभी पहलुओं पर लिखना होगा. आलोचना न करें, बस सीधे विश्लेषणात्मक तरीके से सभी पक्षों को प्रस्तुत करें. निष्कर्ष के रूप में सभी पक्षों का संक्षिप्त सारांश लिखें.
समालोचनात्मक चर्चा	पुनः पहलुओं पर समालोचनात्मक चर्चा करें. चर्चा में आप किसी मुद्दे या समस्या पर उसके दो या सभी पहलुओं पर लिखें. चर्चा एक विस्तार है जिसमें किसी समस्या, मुद्दे और एक परिघटना के सभी पहलुओं को प्रस्तुत करना है. समालोचना एक लोकप्रिय आदेश है. समालोचनात्मक चर्चा किसी के उसके फायदे और नुकसान के परीक्षण द्वारा सभी पहलुओं के प्रस्तुत करने को दर्शाता है. कोई सभी पहलुओं को प्रस्तुत नहीं करता बल्कि विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन करता है. समालोचनात्मक चर्चा पहलुओं के परीक्षण द्वारा या तो दो पहलुओं या पहलुओं के परीक्षण को संदर्भित करता है. एक किसी परिघटना का सकारात्मक बिंदु और नकारात्मक बिंदु देना है. उदाहरणार्थ अहिंसा के गांधीवादी विचार पर समालोचनात्मक चर्चा करनी है. इसमें अहिंसा के सकारात्मक बिन्दुओं को देखें औरभारतीय राष्ट्रीय संघर्ष का उदाहरण जरूर दें. तब अहिंसा कि अवधारणा की गंभीरता के साथ आलोचना करें और अहिंसा के सभी नकारात्मक पहलुओं को उद्धृत करें.
व्याख्या	यह एक सामान्य निर्देश भी है. आप समस्या का अर्थ लिखते हैं जिसमें सभी पहलु सम्मिलित हैं. आप सामन्यतया समस्या में उभर सकने वाली सभी चीजों को लिखने का प्रयास करते हैं. हम एक उदाहरण दे सकते हैं; क्यों स्मार्ट सिटी कार्यक्रम, यह 'स्मार्ट सिटी की व्याख्या' में लिखना होगा. व्याख्या सभी 'क्यों' का उत्तर है. यह सभी पहलुओं को छूता और उसकी पड़ताल करता है. स्पष्टीकरण या व्याख्या प्रश्न के संदर्भ को लिखने के लिए आवश्यक है. आप दिए गए संदर्भ द्वारा व्याख्या करते हैं या सहमत होते हैं. स्पष्ट शब्दावली में आप बिना किसी आलोचना और अपनी राय दिए सभी पहलुओं को लिखते हैं.
समालोचनात्मक परीक्षण, परीक्षण और मूल्यांकन	ये सभी सामान अर्थ ही दर्शाते हैं. आप पहले परिचय की दो पंक्तियों के बाद विचार या प्रस्तुति क्या है, का संक्षिप्त वक्तव्य लिखते हैं. केवल तभी आप मूल्यांकन, आलोचना या परीक्षण कर सकते हैं. परीक्षण का अर्थ केवल विचार की अस्वीकृति नहीं होती बल्कि इसका अर्थ समर्थन व प्रशंसा भी होता है. ऐसे प्रश्नों में आप अपनी तरफ से आलोचना नहीं करते हैं. आप एक विद्वान् की तरह आलोचना करने के योग्य नहीं हैं. आलोचना विद्वानों के विचारों के आधार [पर करें. संक्षेप में, आपको प्रस्ताव को ध्वस्त करना चाहिए.
टिप्पणी	सामान्यतया यह प्रश्न के अंत में प्रस्तुत किया जाता है और इसीलिए इसे प्रत्यय कहा जाता है. टिप्पणी में, आप किसी समस्या या मुद्दा या विषय पर विश्लेषणात्मक तरीके से विभिन्न पहलुओं को लिखते और आप अपनी राय भी देते हैं. टिप्पणी में सम्पूर्ण समस्या या मुद्दे को प्रस्तुत किया जाता है और मुद्दे या समस्या से संबंधित विभिन्न पहलुओं और विभिन्न विचारों की प्रस्तुति है. आलोचना करने का प्रयास नहीं करना चाहिए. आलोचना विद्वानों के विचार हैं और टिप्पणी आपके विचार हैं.

आलोचनात्मक टिप्पणी	साधारण शब्दों में आलोचनात्मक टिप्पणी दोहरा मूल्यांकन है. टिप्पणी में किसी को किसी विशेष मुद्दे पर अपना विचार देना होता है. टिप्पणी में किसी को ऐसी टिप्पणी करने की स्वतंत्रता है जो उस टिप्पणी के लिए या उस विचार के विरोध को दर्शाता हो. टिप्पणी निराधार नहीं है. इसके लिए आपको एक सामान्य अवलोकन की आवश्यकता है और तब आप टिप्पणी करें. यह सामान्य अवलोकन एक प्रकार का मूल्यांकन भी है. आलोचनात्मक टिप्पणी के लिए आपको एक मूल्यांकन के साथ सभी पहलुओं को दिखाना है जो व्यवस्थित और ठोस आधार पर हो. एक तो सभी मुद्दों के विवाद को एक-एक कर सावधानीपूर्वक देखना चाहिए. मूल्यांकन एक निश्चित मापदंड है. इस मूल्यांकन को दिए गए विषय या समस्या के गुणों और अवगुणों को दर्शाना चाहिए. इसलिए आलोचनात्मक टिप्पणी, एक व्यवस्थित रूप में मूल्यांकन के बाद टिप्पणी को दर्शाता है. टिप्पणी सुचिंतित रूप में किसीका विचार है परन्तु जब यह आलोचनात्मक टिप्पणी हो तब यह विचार व्यवस्थित मूल्यांकन के बाद देना चाहिए. उदाहरणार्थ; यदि कोई राष्ट्रवाद के प्रश्न पर टिप्पणी करता है, वह सामान्यतया कह सकता है कि राष्ट्रवाद पवित्र है और किसी को भी इसके खिलाफ कहने की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए. अन्य गैर आलोचनात्मक टिप्पणी हो सकता है कि राष्ट्रवाद के कई आधार हैं और इसके विभिन्न विचार हो सकते हैं. आलोचनात्मक टिप्पणी राष्ट्रवाद के सिद्धांत के मूल्यांकन के द्वारा किया जाएगा और तब एक स्थिति लेगा. कोई राष्ट्रवाद के महत्व और राष्ट्रवाद के सकारात्मक प्रभाव दोनों का मूल्यांकन कर सकता है.
विश्लेषण	यह बारम्बार आने वाला निर्देश है. आप साधरण रूप से एक सादृश याद रखें. चिकित्सा छात्र की तरह जैसे वो अपने प्रयोगशाला में कीट या मानव अंगों को काटकर देखता है वैसे आप समस्या का विश्लेषण करते हैं. आप गहराई में जाते हैं, आंतरिक अर्थों को देखना चाहते हैं.
समालोचनात्मक विश्लेषण	हमने पहले ही विश्लेषण के अर्थ की प्रस्तुति की है. कोई भी किसी घटना के गहराई में जाने कि कोशिश में उसे विश्छेदित करता है और किसी घटना के कारण को प्रस्तुत करता है. इसके लिए किसी को घटना के अंदरूनी तहों में जाने की आवश्यकता है और उसकी शिराओं की खोज करणी पड़ती है. समालोचनात्मक विश्लेषण का अर्थ एक गहन शिरा निरीक्षक है. कोई घटना के केवल मूलभूत कारणों को ही नहीं दर्शाता है बल्कि सभी अन्य आयामों को भी दर्शाता है. समालोचनात्मक विश्लेषण के लिए किसी को मूलभूत कारणों के साथ ही उसके गुणों अवगुणों को भी दर्शाने की आवश्यकता है. यह कारणों के सभी अंतरसंबंधित पहलुओं को देखने और विचार करने को संदर्भित करता है. यह गहराई में और मूलभूत और अंतरसंबंधित कारणों का विश्लेषण करता है. उदाहरणार्थ, कोई भारत में काले धन की समस्या का समालोचनात्मक विश्लेषण करता है. कोई काले धन के स्रोतों को, काले धन के कारणों को, काले धन की पहचान करना क्यों कठिन है, कैसे अमेरिका जैसे अन्य देश इसको करते हैं, लिखता है. समालोचनात्मक विश्लेषण का अर्थ यह नहीं होता कि आपको बहुत संक्षिप्त में बहुत अधिक गहरे कारणों को करना है.
विवरण	यह सबसे सरल निर्देश है. विवरण किसी घटना या तथ्य के सरल कथन का वर्णन है. विवरण में आप न तो आलोचना करेंगे और ना ही विश्लेषण. आप सीधे स्पष्ट विशेषताओं के बारे में लिखें. आप विशेषताओं को सीधे-सीधे लिखें.
सुस्पष्ट करना, विशदीकरण, विस्तृत विवरण और सविस्तार	ये लगभग सामान शब्द हैं. सामन्य तौर पर केन्द्रीय सेवा परीक्षाओं में वर्णन नहीं दिया गया है मगर अन्य प्रश्न वहाँ हैं. इन सभी मामलों में आप सीधे तरीके से तथ्य या तर्कों की अवस्था में हैं. आलोचना को नहीं आजमाना चाहिए. विस्तृत

	विवरण की आवश्यकता है.
भेद करना	यह निर्देश को दर्शाता है जब आप दो या अधिक घटनाओं के बीच अंतर को लिखते हैं. आपको सभी पहलुओं के भेद दिखाने हैं.
तुलना	यह निर्देश है जिसमें आप को सबसे पहले, घटना जिसकी आपको तुलना करनी है, के अर्थ का बहुत ही संक्षेप में प्रस्तुत करना है. तब आपको दोनों की विभिन्नताएं और वैसे ही समानताएं लिखनी हैं. निष्कर्ष में जब आप सार प्रस्तुत करते हैं समानताएं या भिन्नताएं क्या अधिक हैं, को लिखते हैं.
पुष्ट करना	इसका अर्थ है कि आप एक विशेष स्थिति को सिद्ध करते हैं. आप सिर्फ सकारात्मक पहलू बताते हैं. आप अपने तर्क को एक वकील की तरह प्रस्तुत करते हैं. आप परीक्षक को सहमत करते हैं.

GS FOUNDATION BATCH

PRE-CUM-MAINS 2018 ONLINE/OFFLINE

FROM 26 OCT. (TIME- 9:30- 12:00 NOON)

BATCH COMMENCES WITH

ETHICS PAPER - IV

BY S ANSARI

GS PRE-CUM-MAINS TEST SERIES
FROM 12 NOV.
OPTIONAL TEST SERIES
GEOGRAPHY & SOCIOLOGY
FROM 11 NOV.
ESSAY TEST SERIES
FROM 24 NOV.
ETHICS TEST SERIES
FROM 10 NOV.

SOCIOLOGY
BY PROF. MUJTABA HUSSAIN
GEOGRAPHY
BY TIRTHANKER SIR
FROM 31 OCTOBER
ED CURRENT AFFAIRS /NEWS PAPER ANALYSIS
FROM 12 NOV.
GS PAPER IV ETHICS
BY S ANSARI (FROM 26 OCT.)

LUKMAAN IAS

ORN :- 011-45696019, 8506099919 & 9654034293
MUKH. NAGAR: 011-41415591 & 7836816247